

# क्रिस्टोफर कोलंबस की यात्रा

रूथ, हिंदी : विदूषक





क्रिस्टोफर कोलंबस जब छोटा था तब वो इटली में समुद्र के किनारे रहता था.



क्रिस्टोफर कोलंबस कम उम में ही नाविक बन गया था.  
वो मौका मिलते ही समुद्र की यात्रा पर जाता था.



जब कोलंबस पच्चीस साल का हुआ तब वो पुर्तगाल में जाकर बस गया. आजीविका के लिए वो जहाजों के कप्तानों के लिए नक्शे बनाता था.



इंडीज़?

हाँ, चीन,  
जापान, इंडिया!  
वहां सोना है!

मोती भी!

मसाले भी!



जहाजों के कप्तान कोलंबस से अक्सर इंडीज के बारे में पूछते थे. उनका मानना था कि जो भी जहाज़ से इंडीज (इंडिया, भारत) जा पाएगा, वो एक दिन बहुत अमीर बनेगा.

पर इंडीज बहुत दूर था. वहां पहुँचने के लिए किसी भी जहाज़ को अफ्रीका का लम्बा चक्कर लगाना पड़ता. यह यात्रा बहुत लम्बी और खतरनाक साबित हो सकती थी.

पर क्रिस्टोफर कोलंबस को इंडीज पहुँचने का एक आसान रास्ता खोज निकाला था.

इंडीज बिल्कुल पूर्व में स्थित है. पर क्योंकि पृथ्वी गोल है इसलिए हम पश्चिम की ओर जाकर भी इंडीज पहुँच सकते हैं.





कोलंबस ने पुर्तगाल के राजा को अपनी योजना के बारे में बताया.

उसने यात्रा के लिए राजा से जहाज़ और नाविक भी मांगे.

राजा ने कोलंबस की मांग को ठुकरा दिया.

फिर कोलंबस स्पेन गया और उसने वही मांग स्पेन की

महारानी से की. स्पेन पहुँचने के बाद महारानी से मिलने के लिए

कोलंबस को नौ महीने इंतज़ार करना पड़ा.



कोलंबस को छह साल और इंतज़ार करना पड़ा.  
क्योंकि महारानी को निर्णय लेने में छह साल लगे.

पहले महारानी ने कहा “शायद”.

शायद



फिर महारानी ने कहा “नहीं”.

नहीं



तब कोलंबस ने फ्रांस के महाराजा के पास जाने की सोची.  
तभी महारानी ने अपना निर्णय बदला. महारानी ने कोलंबस को यह  
सूचना देने के लिए एक दूत भेजा. वो अब कोलंबस की यात्रा के लिए  
जहाज़ देने को तैयार थीं!





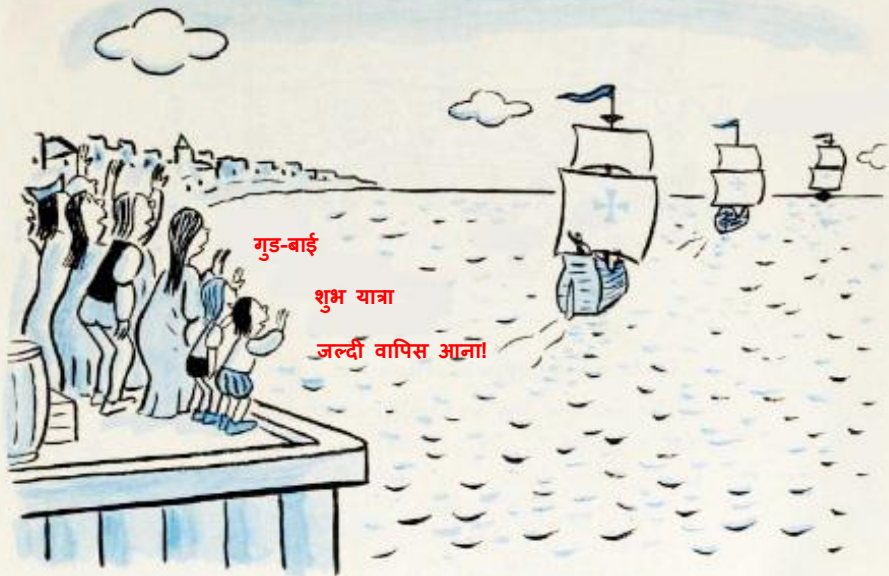
उसके बाद कोलंबस ने अपनी यात्रा की तैयारी शुरू की।  
सबसे पहले उसने जहाज़ तैयार करवाए। फिर उसने  
यात्रा में साथ जाने वाले नाविकों और लड़कों को खोजा।  
उनमें से कई लड़के तो सिर्फ 12-13 साल के थे।

पानी  
नमक  
सूखी मछली  
लोबिया  
पनीर  
वाइन  
आटा  
शहद



फिर उसने जहाज़ में साल भर की समुद्री यात्रा के  
लिए खाने का सामान लादा।





क्रिस्टोफर कोलंबस और उसके तीन जहाज़ *नीना*, *पिंटा* और *सांटा मारिया* – ने 3 अगस्त, 1492 को स्पेन से अपनी यात्रा शुरू की। अब इस घटना को बीते 500 साल से भी ज्यादा हो चुके हैं।

जहाज़ कुछ समय के लिए स्पेन के कुछ द्वीपों पर रुके। वहां पर *पिंटा* की कुछ मरम्मत की गई और साथ में खाने का और सामान भी लादा गया। वे वहां महीना भर रुके। फिर उन्होंने इंडीज की तलाश में पश्चिम की ओर अपनी यात्रा दुबारा शुरू की।





जहाज़ पर हर नाविक को कुछ खास काम करना होता था.

सबसे छोटा लड़का रेत-घड़ी पर लगातार अपनी नज़र रखता था और हरेक आधे घंटे में लोगों को समय बताता था.



जहाज़ पर नाविकों को दिन में सिर्फ एक बार ही गर्म खाना मिलता था. बाकी समय वो कुछ नाश्ता करते - सूखी नमकीन मछली या फिर बिस्कुट खाते थे. कभी-कभी वे जिंदा मछलियाँ भी पकड़कर खाते थे.



हर जहाज़ का कप्तान पलंग पर सोता था. बाकी नाविकों को जहाँ जगह मिलती, उन्हें वहीं सोना पड़ता था.



जहाज़ पर कोई नहाता नहीं था.  
पर नाविक अक्सर समुद्र में तैरते थे.



शाम के समय जहाज़ पर सभी लोग मिलकर प्रार्थना करते और बाद में कोई धार्मिक गीत गाते थे.



इस तरह दो हफ्ते बीते. 25 सितम्बर को नाविकों का लगा  
जैसे उन्हें ज़मीन दिखी – पर वो सिर्फ एक बादल निकला.



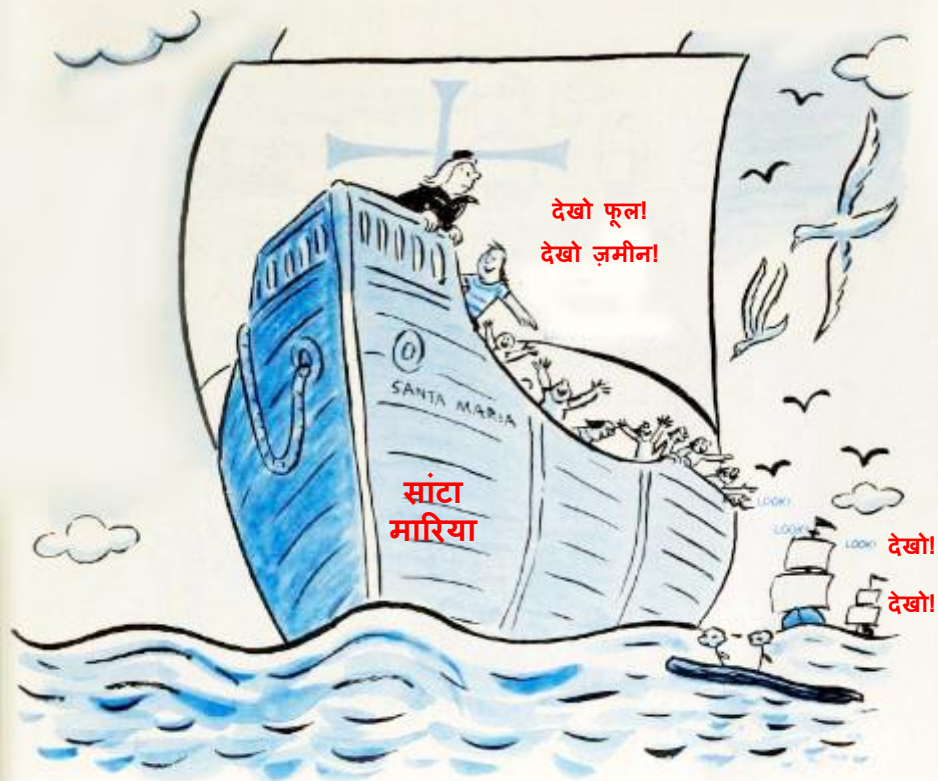
अब हम बहुत सह चुके!

इस तरह एक हफ्ता और बीता. जहाज़ पर काम करने वाले लोगों ने पहले कभी भी समुद्र की यात्रा नहीं की थी. वे समुद्री यात्रा से बीमार और थककर पूरी तरह पस्त हो चुके थे.



नाविकों का गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था. अब समुद्र में यात्रा करते-करते उन्हें एक महीने से ज्यादा हो चुका था.

10 अक्टूबर को कोलंबस ने उनसे वादा किया. “अगर अगले तीन दिनों में हम इंडीज नहीं पहुंचे,” कोलंबस ने कहा, “तो फिर हम वापिस स्पेन लौट चलेंगे.”



11 अक्टूबर को नाविकों ने आसमान की तरफ देखा.  
फिर उन्होंने पानी में नीचे देखा. उन्हें ज़मीन पास होने के  
संकेत दिखाई दिए.



हम इंडीज पहुँचने वाले हैं!

शायद वो जापान होगा!



11 अक्टूबर 1492 को तीनों जहाज़ एक सुन्दर सफ़ेद तट पर पहुंचे. वो बहामा-द्वीप था – जो फ्लोरिडा से ज्यादा दूर नहीं था.



कोलंबस और सभी नाविक अपने सबसे अच्छे और रोबीले कपड़े पहनकर समुद्र तट पर उतरे.

वहां वे रेत पर घुटनों के बल बैठकर खुशी से रोने लगे.

कोलंबस को लगा जैसे कुछ लोग तट से उसे घूर रहे हों. उसका अंदाज़ सही निकला.

कोलंबस को पक्का लगा जैसे वो **इंडीज** (इंडिया या भारत) पहुँच गया था. इसीलिए उसने उन स्थानीय लोगों को “इंडियन्स” के नाम से बुलाया.





कोलंबस ने इंडियन्स को उन की कुछ लाल टोपियाँ, कांच के मोती, और पीतल की घंटियाँ भेंट कीं.

इंडियन्स ने कोलंबस और नाविकों को तोते, भाले और कुछ सूती धागा दिया.



उन्होंने एक-दूसरे से इशारों और संकेतों में बातचीत की.



कुछ इंडियन्स अपनी नाक में सोने के छल्ले पहने थे. कोलंबस ने उनसे पूछा कि वे सोना कहाँ से लाए?

इंडियन्स ने उन्हें सोने की खदानों के बारे में बताया.



फिर अगले ढाई महीनों तक कोलंबस और उसके आदमी सोना खोजते रहे.

उन्होंने कई द्वीप और टापू खोजे. वहां उन्हें ऐसी कई चीज़ें  
दिखीं जिन्हें उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था.



मक्का के खेत

शक्करकंदी

बड़ी छिपकलियाँ

रंग-बिरंगी मछलियाँ



कुत्ते जो भूंकते नहीं थे

नकल करने वाली चिड़ियों

फूस की छत वाली झोपड़ियाँ



हैमक

पेड़ों के तने से बनी नावें



पर उन्हें सोना कहीं भी नहीं मिला.





फिर हिस्पनिओला के द्वीप पर कोलंबस को एक बूढ़ा आदमी मिला. उसने उन्हें सोने की खदान का सही पता बताया.



उसके कुछ दिनों बाद कोलंबस के तीनों जहाज़ एक इंडियन गाँव के पास रुके. वहाँ पर एक हज़ार से भी ज्यादा स्थानीय लोग - इंडियन्स उनके जहाज़ों को देखने आए.





सभी इंडियन्स ने नाविकों को कुछ-कुछ चीज़ें भेंट कीं. कुछ नाविकों को सोने के छोटे टुकड़े भी मिले. कोलंबस को सबसे बढ़िया उपहार मिला. उसे एक बेल्ट मिली जिसका बकिल (बकसुआ) ठोस सोने का बना था!

वहां दो दिनों का रुकना एक जलसे जैसा था. हरेक को उन दोनों दिनों में बहुत मज़ा आया.



वो जलसा 24 दिसम्बर 1492 – क्रिसमस से एक दिन पहले खत्म हुआ. *सांटा मारिया* जहाज़ के सब लोग क्योंकि बहुत थक गये थे इसलिए वे सोने चले गए.

जब वो सो रहे थे तभी उनका जहाज़ तट से आकर टकराया और पूरी तरह नष्ट हो गया.

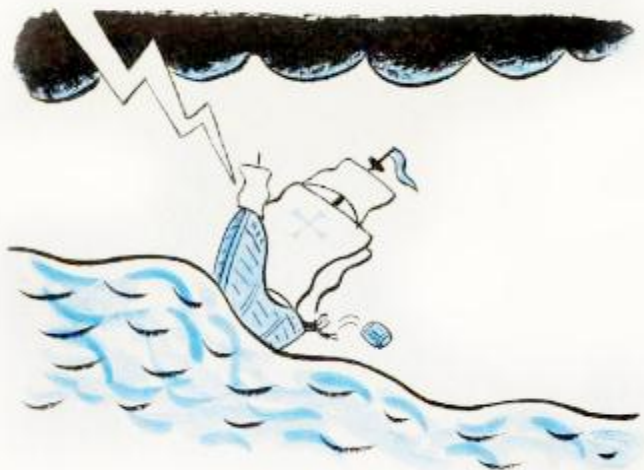
अब कोलंबस के पास सिर्फ दो ही जहाज़ बचे थे – *नीना* और *पिंटा*. *पिंटा*, सोने की खोज में किसी अन्य द्वीप पर गया था. किसी को उसका सही अतापता नहीं पता था.



तब कोलंबस ने तुरंत स्पेन वापिस जाने का निर्णय लिया. क्योंकि *नीना* जहाज़ में सब लोग नहीं समा सकते थे, इसलिए कोलंबस अपने कुछ साथियों को उसी टापू पर छोड़ गया. छोड़े गए लोग काफी खुश थे क्योंकि वे अब तसल्ली से सोने की तलाश कर सकते थे. उन्हें उम्मीद थी कि वे सोने की खदानों को खोज निकालेंगे.



कोलंबस काफ़ी दुखी था क्योंकि वो मोतियों, मसालों और सोना लिए बिना ही वापिस जा रहा था. दूसरी ओर क्योंकि उसने इंडीज की खोज की थी, इसलिए वो खुश भी था. यह सिद्ध करने के लिए कि वो वाकई इंडीज गया था वो अपने साथ कुछ तोते, पौधे, और सोना भी वापिस लेकर जा रहा था.



वापिसी की यात्रा में एक भयानक तूफान आया.

कोलंबस को लगा कि वे सब लोग समुद्र में डूब जायेंगे. फिर स्पेन में किसी को यह मालूम भी नहीं पड़ेगा कि कोलंबस ने इंडीज की खोज की थी. इसलिए उसने स्पेन की महारानी के नाम एक पत्र लिखा. उसने उस पत्र को एक स्टील के ड्रम में रखा. फिर ड्रम को सीलबंद करके उसने उसे समुद्र में फेंक दिया.

वो ड्रम किसी को कभी नहीं मिला. पर *नीना* और *पिंटा* जहाज़ सुरक्षित स्पेन पहुंचे. दोनों जहाज़ समुद्र में दो महीने रहे थे.



15 मार्च 1493 को, क्रिस्टोफर कोलंबस स्पेन वापिस पहुंचा। वहां से वो 800-मील दूर बार्सिलोना शहर में, स्पेन के सम्राट और महारानी से मिलने गया।

बीच में कोलंबस उस शहर में भी रुका जहाँ उसके दो बेटे रहते थे। पिछले आठ महीनों से उसने उन्हें देखा नहीं था। वो उन्हें भी अपने साथ बार्सिलोना ले गया।





जब क्रिस्टोफर कोलंबस राजमहल पहुंचा तब सम्राट और महारानी उसके सम्मान में उठकर खड़े हो गए. जब कोलंबस ने घुटनों के बल झुककर उनके हाथों की चूमना चाहा तब सम्राट और महारानी ने उसे उठाया और अपने पास में बैठाया.



फिर सम्राट और महारानी ने कोलंबस द्वारा लाई सब चीज़ों को देखा. "तुमने बहुत बड़ा काम किया है," उन्होंने कहा. "अब जब तुम तैयार हो तब तुम दुबारा इंडीज की यात्रा पर जा सकते हो. हम तुम्हारे लिए जहाज़ों और नाविकों का इंतजाम करेंगे."

उस दिन क्रिस्टोफर कोलंबस, स्पेन में सबसे खुश इंसान था.

## उसके बाद क्या हुआ?

बारसिलोना में **क्रिस्टोफर कोलंबस** उस दिन जितना खुश था उतनी खुशी उसे ज़िन्दगी में कभी नहीं मिली थी.

वो तीन बार उस देश में वापिस गया जिसे उसने **इंडीज** का नाम दिया था. उसे वहां सोना भी मिला पर बहुत तादाद में नहीं. उसे यात्रा के दौरान खाने के सामान और रसद की किल्लत भी हुई. वो अक्सर बीमार रहता था.

वो स्पेन से कुछ लोगों को लाया और उसने इंडीज में एक स्पेनिश कॉलोनी बसाई. क्योंकि प्रशासन में कोलंबस कुशल नहीं था, इसलिए कोलंबस के अपने ही लोगों ने, उसकी खिलाफत की.

स्पेन के सम्राट और महारानी ने इंडीज की कॉलोनी के संचालन के लिए एक दूसरे आदमी को भेजा. उस आदमी ने जाकर क्रिस्टोफर कोलंबस को गिरफ्तार किया और उसके हाथो-पैरों में लोहे की हथकड़ियाँ डालकर स्पेन वापिस भेजा.

बाद में स्पेन के सम्राट और महारानी को इसका पछतावा भी हुआ. बाद में उन्होंने कोलंबस को चौथी बार इंडीज जाने की इजाज़त दी. यह यात्रा उसके लिए सबसे कठिन थी.

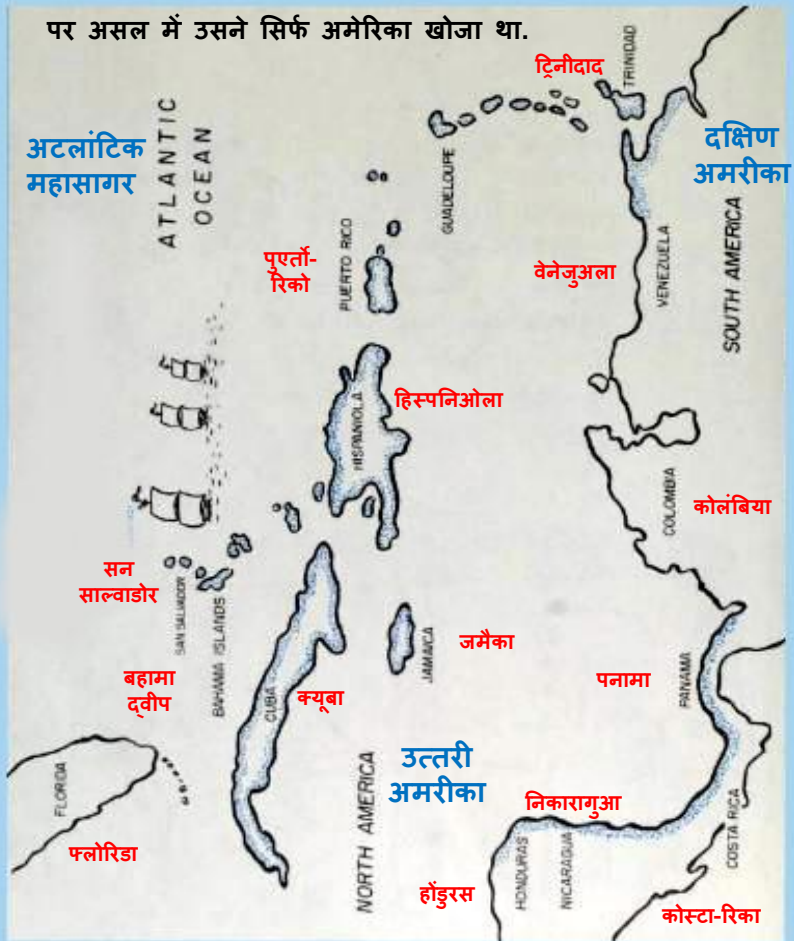
जब कोलंबस स्पेन वापिस आया तो वो बहुत बीमार था। पर वो फिर से इंडीज वापिस जाना चाहता था। वहां वो फिर से स्पेनिश कॉलोनी का संचालन करना चाहता था। पर इस बार सम्राट ने उसे वापिस जाने की इज़ाज़त नहीं दी। तब तक महारानी का देहांत हो चुका था।

क्रिस्टोफर कोलंबस अब बहुत उदास, कमज़ोर और बीमार था। उसके डेढ़ साल बाद 54 वर्ष की आयु में, उसका देहांत हो गया। मृत्यु के समय उसके दोनों बेटे, कुछ मित्र और उसका छोटा भाई उसके पास थे।



क्रिस्टोफर कोलंबस को लगा था कि उसने इंडीज़ (इंडिया) खोज निकला था.

पर असल में उसने सिर्फ अमेरिका खोजा था.





**क्रिस्टोफर कोलंबस अभी-अभी फ्लोरिडा**  
**के पास एक टापू पर पहुंचा है.**  
**उसे ऐसा लगा जैसे कुछ लोग उसे देख रहे हों.**  
**और उसका अंदाज़ सही निकला.**